

मन ही मनुष्य है

मनोवेद डाइजेस्ट

अंक : 2 □ वर्ष : 1 □ अप्रैल-जून 2008 □ मूल्य : 30 रुपये

मानसिक स्वास्थ्य की पत्रिका

बातचीत : नैन्सी. एंड्रियासेन
मनोचिकित्सक की कलम से : मानसिक स्वास्थ्य,
बाल अपराध, इंटरनेट की लत, तनाव
नोटिस बोर्ड : मैनिया, डिस्लेक्सिया
किताब के बहाने : पिकासो की स्त्रियाँ
समीक्षा : साधु, ओझा, संत
निष्कलंक : मीना कुमारी
इस अंक की दवा : वालप्रोएट



प्रार्थना मत कर, मत कर, मत कर!

युद्धक्षेत्र में दिखला भुजबल,
रहकर अविजित, अविचल प्रतिपल,
मनुज-पराजय के स्मारक हैं मठ, मस्जिद, गिरजाघर!
प्रार्थना मत कर, मत कर, मत कर!

मिला नहीं जो स्वेद बहाकर,
निज लोहू से भीग-नहाकर,
वर्जित उसको, जिसे ध्यान है जग में कहलाए नर!
प्रार्थना मत कर, मत कर, मत कर!

झुकी हुई अभिमानी गर्दन,
बँधे हाथ, नत-निष्प्रभ लोचन.
यह मनुष्य का चित्र नहीं है, पशु का है, रे कायर!
प्रार्थना मत कर, मत कर, मत कर!

हरिवंश राय बच्चन



यू तो हरिवंश राय बच्चन भी सपनों का फलाफल
देखा करते थे जैसा कि उन्होंने अपनी जीवनी में
चर्चा भी की है पर अपनी इस कमजोरी से वे
जूझते भी थे। अमिताभ बच्चन के अतिशय
कर्मकांड-प्रेम के सन्दर्भ में बच्चन की इस कविता
को हम आज भी प्रासंगिक पाते हैं।